बी० ए० II

प्रथम प्रश्न-पत्र

हेमपुंज, हेमन्तकाल के इस आतप पर वारूँ,
प्रिय स्पर्श की पुलकावलि में कैसे आज बिसारूँ?
किन्तु शिशिर, मे ठण्डी साँसें, हाय! कहाँ तक धारूँ?
तन गारूँ, मन मारूँ पर क्या मैं जीवन भी हारूँ?
मेरी बाँह गही स्वामी ने,
मैंने उनकी दाँह गही,
मैंने दी क्या सब, सबी ने
मेरी बाधा-व्यथा सही।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य की पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'यशोधरा-विरह' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने हेमन्त काल में विरहिणी यशोधरा की मानसिक दशा का चित्रण किया है।

व्याख्या –

प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने हेमन्तकाल में विरहिणी यशोधरा की मानसिक दशा का चित्रण किया है। हेमन्त ऋतु में ठण्डक बढ़ जाने के कारण सूर्य की गर्मी अत्यन्त सुखकर प्रतीत होती है। यशोधरा उस हेमन्त-कालीन गर्मी की प्रशंसा करते हुए कहती है कि यह इतनी सुन्दर है कि इस पर स्वर्ण राशि भी न्यौछावर की जा सकती है। इस गर्मी से यशोधरा को अपने प्रिय के साथ हेमन्तकाल में बिताये हुए सुखद क्षणों की स्मृति हो जाती है। वह कहती है कि आज वियोगावस्था में भी मैं हेमन्त काल में प्रिय के स्पर्श से जो प्रसन्नता होती थी, उसे

नहीं भूल पा रही हूँ।
पुनः वह कहती है कि आज प्रिय नहीं है किन्तु हेमन्तकालीन ठण्डक है। मैं अकेले इस ठण्डक में आह भरी ठण्डी उसासें कब तक भरती रहूँ। पुनः वह चैतन्य होकर कहती है कि क्या इस ठण्डक से दुःखी होकर मैं अपने तन-मन और जीवन को समाप्त कर लूँ? वह कहती है कि उनके प्रिय ने उसकी रक्षा का भार ग्रहण किया और मैंने इनका आश्रय स्वीकार किया है। अतः मैं विरह-व्यथा से व्यग्र होकर अपना जीवन समाप्त नहीं कर सकती हूँ। यहाँ यशोधरा का संकेत गौतम बुद्ध के साथ पति-पत्नी सम्बन्ध की ओर है।

विशेष- (1) इन पंक्तियों में हेमन्तकाल की ठण्डक को यशोधरा की विरहिणी दशा के समान बतायी गयी है।
(2) हेमन्तकालीन सूर्य की गर्मी यशोधरा के लिए प्रिय की स्मृति के समान चित्रित की गयी है।
(3) 'बाँह गही' और 'दाँह गही' लोकोक्तियों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
(4) भाषा शुद्ध तत्सम खड़ी बोली है।

23/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया